सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता
(OBJECTIVITY IN SOCIAL SCIENCES)

समाजशास्त्रीय अध्ययनों में प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति प्रामाणिकता लाना कठिन है। समाज विज्ञानों के नियम प्राकृतिक विज्ञानों के नियमों की भाँति अटल नहीं होते, वे तो सामाजिक व्यवहार के सम्बन्ध में सम्भावित प्रवृत्ति को प्रकट करते हैं। ऐसी स्थिति के लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं; जैसे—सामाजिक प्रघटना का स्वभाव, ठोस मापदण्डों का विकसित न होना आदि। इन्हीं कारणों में एक प्रमुख समस्या वस्तुनिष्ठता की भी है। किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन एवं अनुसन्धान की सफलता की पूर्वापेक्षित शर्त वस्तुनिष्ठता है। इसके अभाव में अनुसन्धान के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता सन्दिग्ध हो जाती है। यही कारण है कि समाजशास्त्र में प्रारम्भ से ही इस समस्या पर विचार किया जाता रहा है। इस प्रश्न में वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य क्या है? इसके मार्ग में कौन-सी प्रमुख बाधाएँ हैं? तथा उन बाधाओं पर किस प्रकार नियन्त्रण किया जा सकता है? वस्तुनिष्ठता के बारे में वेबर के क्या विचार हैं? आदि तथ्यों पर विचार किया जाएगा।

सामाजिक अनुसन्धान का उद्देश्य किसी घटना का वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन करके उसे यथार्थ रूप से समझना है। यह उद्देश्य तभी सम्भव हो सकता है यदि अनुसन्धानकर्ता घटना के अध्ययन को अपने विचारों से प्रभावित न होने दे। अन्य शब्दों में, घटना के वस्तुनिष्ठ अध्ययन द्वारा ही उसे यथार्थ रूप से समझा जा सकता है। यदि विभिन्न अनुसन्धानकर्ता एक घटना का अध्ययन कर एक समान निष्कर्ष निकालते हैं, तो हम उस अध्ययन को वस्तुनिष्ठ अध्ययन कह सकते हैं। यदि उनके निष्कर्षों में काफी अन्तर है, तो इसका अर्थ यह है कि अनुसन्धानकर्ताओं के विचारों ने अध्ययन को प्रभावित किया है, क्योंकि जब घटना एक है तो उसके अध्ययन के बारे में एक समान निष्कर्ष होने चाहिए।

क्या सामाजिक अनुसन्धान पूर्णत: वस्तुनिष्ठ हो सकता है या नहीं? यह प्रारम्भ से ही सामाजिक विज्ञानों में एक वाद-विवाद एवं मार्मिक चर्चा का विषय रहा है और आज भी इसके बारे में मतैक्य का अभाव पाया जाता है। कुछ विद्वानों (यथा **मैक्स वेबर**) का कहना है कि सामाजिक- सांस्कृतिक घटनाओं की प्रकृति ही ऐसी है कि इनका पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया ही नहीं जा सकता, जबकि अनेक अन्य विद्वानों (यथा **दुर्खीम**) का विचार है कि समाजशास्त्रीय अध्ययनों में वस्तुनिष्ठता रखना सम्भव है। दुर्खीम ने इस बात का दावा ही नहीं किया अपितु धर्म, श्रम- विभाजन एवं आत्महत्या जैसे सामाजिक तथ्यों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने में सफलता भी प्राप्त की। परन्तु फिर भी आज अनेक विद्वान् यह मानते हैं कि सामाजिक घटनाओं की प्रकृति प्राकृतिक घटनाओं की प्रकृति से भिन्न है जिसके कारण इनका पूर्ण वस्तुनिष्ठ अध्ययन सम्भव नहीं है। हाँ, अनुसन्धानकर्ता अनेक सावधानियों का प्रयोग कर अपने विचारों के प्रभावों अर्थात् व्यक्तिनिष्ठता या व्यक्तिपरकता (Subjectivity) को कम-से-कम करने का प्रयास कर सकता है।

वस्तुनिष्ठता का अर्थ एवं परिभाषाएँ

वस्तुनिष्ठता का अभिप्राय घटना का यथार्थ या वास्तविक रूप में अर्थात् उसी रूप में, जिसमें वे हैं, वर्णन करना है। यह एक तरह से वैज्ञानिक भावना है जो अनुसन्धानकर्ता को उसके पूर्व दृष्टिकोणों से उसके अध्ययन को प्रभावित करने से रोकती है। यदि कोई अनुसन्धानकर्ता किसी घटना का वर्णन उसी रूप में करता है जिसमें कि वह विद्यमान है, चाहे उसके बारे में अनुसन्धानकर्ता के विचार कुछ भी क्यों न हों, तो हम इसे वस्तुनिष्ठ अध्ययन कह सकते हैं।

दैनिक जीवन की भाषा में वस्तुनिष्ठ शब्द का आशय पूर्वाग्रह-रहित, तटस्थ या केवल तथ्यों पर आधारित होता है। किसी भी वस्तु के बारे में वस्तुनिष्ठ होने के लिए हमें वस्तु के बारे में अपनी भावनाओं या मनोवृत्तियों को अवश्य अनदेखा करना चाहिए। इसीलिए वस्तुनिष्ठता तथ्यों को वैसे ही प्रस्तुत करने में सहायक है जैसे कि वे हैं। जब एक भू-वैज्ञानिक चट्टानों का अध्ययन करता है अथवा एक वनस्पतिशास्त्री पौधों का अध्ययन करता है तो उनके व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या मान्यताएँ उनके अध्ययन को प्रभावित नहीं करती हैं। वे स्वयं उस संसार का हिस्सा नहीं होते जिनका वे अध्ययन करते हैं। इसके विपरीत, समाजशास्त्री एवं अन्य सामाजिक वैज्ञानिक उस संसार का अध्ययन करते हैं जिनमें वे स्वयं रहते हैं। इसलिए उनके द्वारा किया जाने वाला अध्ययन 'व्यक्तिनिष्ठ' होता है। उदाहरणार्थ, पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला समाजशास्त्री भी स्वयं एक परिवार का सदस्य होता है तथा उसके अनुभवों का उसके अध्ययन पर प्रभाव पड़ सकता है। हो

सकता है कि वह पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में अपने कुछ मूल्य अथवा पूर्वाग्रह रखता हो। इसीलिए सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता बनाए रखना एक प्रमुख समस्या है।

प्रमुख विद्वानों ने इसकी परिभाषाएँ निम्नलिखित प्रकार से दी हैं—

(1) **कार** (Carr) के अनुसार—"सत्य की वस्तुनिष्ठता से अभिप्राय है कि दृष्टि विषयक जगत किसी व्यक्ति के प्रयासों, आशाओं या भय से स्वतन्त्र एक वास्तविकता है, जिसे हम सहज ज्ञान एवं कल्पना से नहीं बल्कि वास्तविक अवलोकन के द्वारा प्राप्त करते हैं।"

(2) **ग्रीन** (Green) के अनुसार—"वस्तुनिष्ठता प्रमाण का निष्पक्षता से परीक्षण करने की इच्छा एवं योग्यता है।"

(3) **फेयरचाइल्ड** (Fairchild) के अनुसार—"वस्तुनिष्ठता का अर्थ तथ्यों को पक्षपात तथा उद्देश्य के आधार पर नहीं, बल्कि प्रमाण एवं तर्क के आधार पर बिना किसी सुझाव या पूर्व- धारणाओं के, सही पृष्ठभूमि में देखने की योग्यता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुनिष्ठता किसी घटना का निष्पक्ष एवं तटस्थ रूप से अध्ययन करने की भावना एवं क्षमता है जो अनुसन्धानकर्ता को अध्ययन करते समय उसके अपने विश्वासों, आशाओं एवं भय से दूर रखती है। सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता रखना इन्हें विज्ञान की श्रेणी में लाने के लिए अत्यन्त अनिवार्य है।

वस्तुनिष्ठता से सम्बन्धित समस्याएँ

प्रत्येक विज्ञान अपनी विषय-वस्तु का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप से करने का प्रयास करता है, परन्तु सामाजिक घटनाओं की प्रकृति के कारण सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता रख पाना एक कठिन कार्य है। इसमें आने वाली प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

(1) समस्या का चयन मूल्य-निर्णयों द्वारा प्रभावित—सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता न रख पाने का सर्वप्रथम कारण अनुसन्धान समस्या का चयन है जो कि अन्वेषणकर्ता के मूल्यों तथा रुचियों द्वारा प्रभावित होता है। समस्या का चयन सदैव मूल्यों से सम्बन्धित होता है और इसीलिए सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाओं का पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ अथवा वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं है।

(2) अध्ययन से तटस्थता असम्भव—सामाजिक अनुसन्धान में जब हम व्यक्तियों एवं समूहों का अध्ययन करते हैं तो स्वयं एक सामाजिक प्राणी होने के कारण हम अध्ययन से अपने आपको तटस्थ अथवा पृथक् नहीं रख पाते। प्राकृतिक विज्ञानों में ऐसा इसलिए सम्भव हो जाता है क्योंकि उनमें जड़ या निर्जीव वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है। स्वयं सामाजिक समूह, विशेष जाति एवं सम्प्रदाय का सदस्य होने के कारण अनुसन्धानकर्ता का पक्षपात या किसी विशेष बात की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। अत: सामाजिक विज्ञानों में निष्कर्षों की अनुसन्धानकर्ता की मनोवृत्तियों या मूल्यों द्वारा प्रभावित होने की सम्भावना अधिक होती है।

(3) बाह्य हितों द्वारा बाधा—सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता से सम्बन्धित तीसरी बाधा अनुसन्धानकर्ता के बाह्य हित हैं। जब वह अपने समूह का अध्ययन करता है तो बहुत-सी बातों, जिन्हें वह अनुचित मानता है, की उपेक्षा कर देता है। दूसरी ओर, जब वह किसी दूसरे समूह का अध्ययन करता है तो वह ऐसी बातों की ओर अधिक ध्यान देता है। इससे अध्ययन की वस्तुनिष्ठता प्रभावित होती है।

(4) सामाजिक घटनाओं की प्रकृति—सामाजिक घटनाओं की प्रकृति भी सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठ अध्ययनों में एक बाधा है। क्योंकि इनकी प्रकृति गुणात्मक होती है और कई बार अनुसन्धानकर्ता को समूह के सदस्यों की मनोवृत्तियों, मूल्यों एवं आदर्शों आदि का अध्ययन करना पड़ता है, इसीलिए उसके लिए परिशुद्ध एवं यथार्थ रूप में घटनाओं का निष्पक्ष अध्ययन करना सम्भव नहीं रह पाता।

(5) संजातिकेन्द्रवाद—अनुसन्धानकर्ता स्वयं एक सामाजिक प्राणी है तथा वह किसी विशेष जाति, प्रजाति, वर्ग, लिंग, समूह का सदस्य होने के नाते विभिन्न मानवीय क्रियाओं एवं सामाजिक पहलुओं के बारे में अपने विचार एवं मूल्य रखता है। उसके ये विचार एवं मूल्य उसके अध्ययन को प्रभावित करते हैं। **लुण्डबर्ग** (Lundberg) के अनुसार अनुसन्धानकर्ता के नैतिक मूल्य का उसके अध्ययन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त बाधाओं के अतिरिक्त अनेक अन्य ऐसे कारण भी हैं जो सामाजिक विज्ञानों में होने वाले अध्ययनों में पक्षपात या अभिनति (Bias) लाते हैं। अभिनति के ऐसे कुछ प्रमुख स्रोत निम्नांकित हैं—

(1) अनुसन्धानकर्ता के अपने मूल्यों से सम्बन्धित अभिनति,
(2) सूचनादाता की अभिनति,
(3) निदर्शन के चुनाव में अभिनति,
(4) सामग्री संकलन करने की दोषपूर्ण प्रविधियाँ तथा
(5) सामग्री के विश्लेषण एवं निर्वचन में अभिनति।

वस्तुनिष्ठता की समस्या के बारे में वेबर के विचार

मैक्स वेबर के अनुसार प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञानों में अन्तर अन्वेषणकर्ता के अनुभव सम्बन्धी आशयों (Cognitive intentions) का परिणाम है, न कि मानव-क्रिया की विषय-वस्तु के अध्ययन में वैज्ञानिक तथा सामान्यीकरण विधियों के प्रयोग करने की कठिनाई। अन्वेषण की विधियों से अधिक, वैज्ञानिक की रुचियाँ तथा उद्देश्य महत्त्वपूर्ण होते हैं। दोनों ही तरह के विज्ञानों में अमूर्तता (Abstraction) का सहारा लिया जाता है, अमूर्तता के लिए दोनों ही तरह के विज्ञानों में वास्तविकता के विभिन्न पहलुओं में से कुछ पहलुओं का चयन करना पड़ता है।

समस्या का चयन सदैव मूल्य-निर्णयों द्वारा प्रभावित

कौन-सी विशेष समस्या तथा उसकी किस प्रकार की व्याख्या विद्वान् का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित करती है, यह अन्वेषणकर्ता के मूल्यों तथा रुचियों पर निर्भर करता है। समस्या का चयन सदैव मूल्यों से सम्बन्धित (Value relevant) है। संस्कृति अथवा समाज का पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ अथवा वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं है क्योंकि इनके अध्ययन का दृष्टिकोण एक-तरफा है जिसका चयन तथा व्याख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष, चेतन अथवा अचेतन रूप से की जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक अथवा सामाजिक प्रघटना को बिना इसके महत्त्व को ध्यान में रखे नहीं समझा जा सकता। प्रत्येक सामाजिक प्रघटना अपने आप में विशिष्ट होती है तथा कोई भी सांस्कृतिक घटना अपने आपको दोहराती नहीं है। सामाजिक वास्तविकता के बारे में ज्ञान सार्वभौमिक नहीं है क्योंकि यह ज्ञान किसी विशेष दृष्टिकोण के अनुसार प्राप्त किया गया है। यह चेतना सम्बन्धी ज्ञान है। इसलिए प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या सामाजिक प्रघटनाओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप से किया जा सकता है? वस्तुनिष्ठ अध्ययन का अभिप्राय है कि वह अध्ययन चेतना सम्बन्धी नहीं है अर्थात् हमारे अपने विचारों द्वारा प्रभावित नहीं है। वस्तुनिष्ठ अध्ययन निष्पक्ष होता है जिस पर अनुसन्धानकर्ता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सामाजिक वास्तविकता का अध्ययन केवल एक-तरफा है क्योंकि वैज्ञानिक केवल अपनी रुचि व मूल्यों के आधार पर समस्या व प्रघटना का चयन ही नहीं करता अपितु इसका अध्ययन भी अपने दृष्टिकोण से करता है अर्थात् केवल उसी पक्ष की ओर अधिक ध्यान देता है जिसे वह महत्त्वपूर्ण मानता है।

वेबर ने इस बात पर बल दिया है कि मूल्य अन्वेषणकर्ता द्वारा समस्या के चयन को प्रभावित करता है क्योंकि समस्या के चयन के लिए कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है तथा इससे सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता का उल्लंघन होता है। यह प्रश्न कि कोई प्रस्तावना सही है अथवा गलत है, तार्किक दृष्टि से इससे भिन्न है कि मूल्यों से इसका क्या सम्बन्ध है। मूल्य सम्बन्ध समस्या के चयन को प्रभावित करते हैं, न कि उस समस्या की व्याख्या को। इसलिए वेबर का कहना है कि सामाजिक विज्ञानों में समस्या के चयन में मूल्यों के प्रभाव को नहीं रोका जा सकता परन्तु समस्या का चयन कर लेने के बाद वस्तुनिष्ठता बनाए रखी जा सकती है।

समस्या के चयन के बाद वस्तुनिष्ठ अध्ययन सम्भव

समस्या का चयन कर लेने के बाद (जो कि मूल्यों से प्रभावित होती है) सामाजिक वैज्ञानिक को अपने अथवा अन्य व्यक्तियों के मूल्यों को दूर रखकर सामग्री द्वारा प्रकट रूपरेखा का अनुसरण करना चाहिए। वह अपने विचारों को सामग्री पर थोप नही सकता तथा इसलिए जरूरी नहीं है कि निष्कर्ष उसकी अपनी मान्यता अथवा मूल्यों के अनुरूप ही हों। वेबर इसे नैतिक निष्पक्षता कहते हैं। इनका कहना है कि, ''मूल्य निर्णयों का वैज्ञानिक अध्ययन केवल अपेक्षित साध्यों अथवा आदर्शों को समझाने तथा आनुभविक विश्लेषण में सहायता ही नहीं करता अपितु उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी कर सकता है।'' यह आलोचना द्वन्द्ववादी प्रकृति की है अर्थात् यह ऐतिहासिक मूल्य-निर्णयों तथा विचारों से सम्बन्धित औपचारिक तार्किक मूल्यांकन है। इसके द्वारा समाज वैज्ञानिक मूल्यों के प्रति जागरूक हो जाता है तथा इनसे अपने अध्ययन को प्रभावित नहीं होने देता।

कोई भी आनुभविक विज्ञान यह नहीं बताता है कि किसी व्यक्ति को क्या करना चाहिए अपितु यह बताता है कि वह क्या कर सकता है। यह सत्य है कि सामाजिक विज्ञानों में व्यक्तिगत मूल्य-निर्णय हमारे वैज्ञानिक तर्कों को प्रभावित करते हैं परन्तु फिर भी हम समस्या के चयन के पश्चात् वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार, वेबर कहते हैं कि अनुसन्धान की प्रारम्भिक अवस्थाओं; विशेषकर समस्या के चयन तक हमारे मूल्य हमारे अध्ययन को प्रभावित करते हैं परन्तु उसके बाद वस्तुनिष्ठता रखी जा सकती है। वास्तव में, प्रारम्भिक अवस्था में सामाजिक विद्वानों का एक-तरफा दृष्टिकोण होने के कारण वस्तुनिष्ठता नहीं रखी जा सकती। वेबर की यह मान्यता थी कि सामाजिक विज्ञान, जिसके विषय में हमारी रुचि है, यथार्थ वास्तविकता से सम्बन्धित आनुभविक विज्ञान है। एक ओर हम व्यक्तिगत प्रघटनाओं में सम्बन्धों तथा उनके सांस्कृतिक महत्त्व का अध्ययन करना चाहते हैं, जबकि दूसरी ओर उनके ऐतिहासिक होने के कारणों का अध्ययन करना चाहते हैं। अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने तथा तुलनात्मक अध्ययनों में सहायता करने के लिए इन्होंने आदर्श-प्ररूप की अवधारणा का निर्माण किया जो हमें मूर्तता से अमूर्तता की ओर ले जाती है तथा इस अमूर्त अवधारणात्मक निर्माण से हम फिर यथार्थ वास्तविकता को समझने का प्रयास करते हैं। वेबर इस बात को मानते हैं कि सार्वभौमिक नियमों का निर्माण सामाजिक विज्ञानों में नहीं किया जा सकता तथा इनकी यह मान्यता है कि इन नियमों की खोज करना सामाजिक विज्ञानों के लिए महत्त्वपूर्ण भी नहीं है।

सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता तथा इसे बनाए रखने के उपाय

सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता बनाए रखना अत्यन्त अनिवार्य है क्योंकि यदि ऐसा नहीं किया जाता तो हम कभी यथार्थता एवं वास्तविकता का अध्ययन नहीं कर पाएँगे। वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता निम्नांकित बातों से स्पष्ट की जा सकती है—

(1) वैज्ञानिक पद्धति के सफल प्रयोग हेतु सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता बनाए रखना अनिवार्य है,

(2) घटनाओं को यथार्थ एवं वास्तविक रूप में समझने के लिए वस्तुनिष्ठता अनिवार्य है,

(3) पक्षपातरहित निष्कर्षों की प्राप्ति के लिए वस्तुनिष्ठता आवश्यक है,

(4) प्रतिनिधि तथ्यों की प्राप्ति के लिए वस्तुनिष्ठता आवश्यक है तथा

(5) तथ्यों एवं सिद्धान्तों की पुनर्परीक्षा एवं सत्यापन के लिए वस्तुनिष्ठता आवश्यक है।

सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता को निम्नांकित उपायों द्वारा बनाए रखा जा सकता है—

(1) आनुभविक अध्ययन—अगर अनुसन्धानकर्ता स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर घटनाओं का उसी रूप में अध्ययन करे जिस रूप में वे विद्यमान हैं तो उसका अध्ययन वस्तुनिष्ठ हो सकता है। उसे घटनाओं को अपने विचारों एवं मूल्यों के सन्दर्भ में न देखकर एक तटस्थ अनुसन्धानकर्ता के दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

(2) स्पष्ट शब्दों एवं अवधारणाओं का प्रयोग—अनुसन्धानकर्ता अपने अध्ययन में स्पष्ट रूप से परिभाषित शब्दों एवं अवधारणाओं का प्रयोग करके वस्तुनिष्ठता बनाए रख सकता है क्योंकि ऐसी स्थिति में लोग इनका अर्थ वही समझेंगे जिसमें कि अनुसन्धानकर्ता ने इनका प्रयोग किया है।

(3) दैव निदर्शन का प्रयोग—सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता के अभाव एवं अभिनति का एक प्रमुख स्रोत निदर्शन का समग्र का प्रतिनिधि नहीं होना है। इसका समाधान दैव निदर्शन विधि का प्रयोग करके किया जा सकता है। यह ही निदर्शन का केवल एक ऐसा प्रकार है जिसमें प्रतिनिधि इकाइयों का चयन सम्भव हो जाता है और पक्षपात की सम्भावना भी नहीं रहती।

(4) एक से अधिक प्रविधियों का प्रयोग—सामग्री एकत्रित करने के यन्त्र के रूप में, प्रत्येक प्रविधि के अपने कुछ दोष हैं जो कि अनुसन्धान की वस्तुनिष्ठता को प्रभावित करते हैं। इसका समाधान काफी सीमा तक एक से अधिक प्रविधियों का प्रयोग करके किया जा सकता है क्योंकि इससे एकत्रित सामग्री की प्रामाणिकता की जाँच हो जाएगी।

(5) समूह अनुसन्धान प्रणाली—सामाजिक अनुसन्धान में अभिनति कम करने एवं वस्तुनिष्ठता बनाए रखने का एक अन्य साधन समूह अनुसन्धान है जिसमें अनुसन्धानकर्ताओं की एक टीम सामूहिक रूप से घटनाओं का अवलोकन करती है। इसमें व्यक्तिगत पक्षपात की सम्भावना कम हो जाती है।

(6) यान्त्रिक उपकरणों का प्रयोग—यान्त्रिक उपकरणों के प्रयोग द्वारा भी सामाजिक अनुसन्धान में वस्तुनिष्ठता बनाए रखी जा सकती है। टेपरिकॉर्डर एवं कैमरे का प्रयोग आज अनेक अध्ययनों में इसीलिए किया जाने लगा है क्योंकि इन पर आधारित अध्ययन में पक्षपात की सम्भावना कम हो जाती है।

सच तो यह है कि वस्तुनिष्ठता की समस्या जितनी विस्तृत और गहन बताई जाती है, उतनी है नहीं। वस्तुनिष्ठता एक मानसिक गुण अथवा दृष्टिकोण है। यह कुछ सीमा तक व्यक्ति-विशेष के रुझान और कुछ सीमा तक उसके प्रशिक्षण पर आधारित होता है। अनुसन्धानकर्ता का प्रशिक्षण और क्षेत्रीय अनुभव जितना अधिक बढ़ता जाता है उतना ही वह वस्तुनिष्ठता का गुण अर्जित करता जाता है। वास्तव में, यह अभ्यास, अनुभव और प्रशिक्षण का विषय है। समाज विज्ञानों में यह कोई असाध्य समस्या नहीं है। इसका समाधान सम्भव है और अनेक समाजशास्त्रियों ने वस्तुनिष्ठता के पालन की सम्भावना को साकार कर दिखाया है। ●